RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-05
Issue-01
January -2020

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]

# माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में पर्यावरण शिक्षा की प्रासंगिकता

रानी सिंह

गवेषिका, शिक्षाशास्त्र विभाग ल0 ना0 मिथिला विश्वविद्यालय दरभंगा

सम्पूर्ण दुनियाँ में पर्यावरण संकट के संदर्भ में अध्ययन एवं अनुसंधान जारी है। डार्विन ने स्पष्ट किया था कि अस्तित्व के संघर्ष में सर्वोत्तम व्यक्ति ही अपनी रक्षा कर पाता है। पर्यावरण संकट तथा प्रदूषण के कारण मनुष्य कई प्रकार की समस्याओं से जुझ रहा है। अत: पर्यावरण शिक्षा पर ध्यान केन्द्रित किया गया है। पर्यावरण शिक्षा प्रकृतिवाद की विचारधारा से संबंधित है। रूसो ने प्रकृतिवाद का सिद्धांत प्रस्तुत किया। उनके अनुसार स्वाभाविक रूप में बच्चों को पर्यावरण के संबंध में शिक्षित किया जाना चाहिए। जाहिर है कि शिक्षा के विविध आयामों के साथ पर्यावरण शिक्षा का स्पष्ट एवं तर्कपूर्ण संबंध मौजूद है। रूसो की 'एमील' तथा 'स्पेंसर' की रचना 'एडूकेशन' में शिक्षा तथा पर्यावरण शिक्षा के बीच घनिष्ठ संबंधों को रेखांकित किया गया है। गुरूदेव रविन्द्र नाथ टैगोर ने 'विश्वभारती' में व्यापक स्तर पर पर्यावरण शिक्षा के तकनीकों का उपयोग किया था। आधुनिक शिक्षा के क्षेत्र मे नये प्रयोग किये जा रहे है। शैक्षणिक तकनीकों में परिवर्त्तन हो रहा है। संचार क्रान्ति के तकनीकों का शिक्षा के क्षेत्र में उपयोग हो रहा है। इस प्रकार आधुनिक शैक्षणिक तकनीकों के जरिये भी पर्यावरण शिक्षा के संबंध में विस्तृत एवं प्रमाणित जानकारी दी जा सकती है। इस प्रकार शिक्षा तथा पर्यावरण शिक्षा के बीच स्पष्ट संबंध है। इसके आधार पर बच्चो का संतुलित समाजीकरण भी हो सकता है तथा पर्यावरण के संकट से जुझ रहे मानव समाज के संदर्भ में छात्र–छात्राओं को जानकारी प्राप्त हो सकती है।

प्राचीन काल में भी डिमाक्राइटस, ल्यूसिपस, थेल्स, एपीक्यूरस, ल्यूकरटियस आदि प्रमुख चिन्तकों ने भी पर्यावरण शिक्षा के महत्व को स्वीकार किया था। आधुनिक समय में संयुक्त राष्ट्र संघ तथा अनेक संगठनों ने 1960 के औद्योगिक समाज में विशेष तौर पर पर्यावरण शिक्षा के महत्व को स्वीकार किया है। मानव अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए लगातार संघर्ष करता है, परन्तु पर्यावरण संकट तथा प्रदूषण की समस्या के कारण मानव समाज संकट के दौर में है। अत: K. Malone[1] ने 1999 में अपनी पुस्तक 'Environment education researchers as environmental activists' में सपष्ट किया है कि कोई भी शैक्षणिक पाठ्यक्रम पर्यावरण शिक्षा के बिना अधूरा है। उनके अनुसार आधुनिक शैक्षणिक आधार पर पर्यावरण शिक्षा का विकास किया जाना चाहिए।

पर्यावरण शिक्षा के आधार पर छात्र–छात्राओं को पर्यावरण के विभिन्न उपादानों की जानकारी प्राप्त होती है। उन्हें पर्यावरण संरक्षण के वैज्ञानिक तकनीकों के संबंध में परिज्ञान होता है। पर्यावरण संरक्षण के प्रति उनमे एक नई चेतना पैदा होती है। D.W. Hoelscher ने अपनी शोध निबन्ध 'Cultivating the Ecological Conscience: Smith, Orr, and Bowers on Ecological Education' में स्पष्ट किया है कि मनुष्य आँख खोलने के साथ पर्यावरण से जुड़ जाता है। उसे ऑक्सीजन और जल चाहिए। सूर्य और चन्द्रमा उसका सम्पर्क होता है। नदी और समुद्र के संबंध में परिज्ञान प्राप्त करता है। उनके अनुसार पर्यावरण शिक्षा का लाभ यह है कि मनुष्य पर्यावरण संरक्षण की दिशा में कदम बढाता है। तथा प्रदूषण के निराकरण के लिए क्रियाशील होता है।

प्रस्तुत शोध–पत्र पर्यावरण शिक्षा पर केन्द्रित है। पर्यावरण शिक्षा को विशेष महत्व दिया जा रहा है। देश–विदेश के विभिन्न शिक्षा संकायों में पर्यावरण शिक्षा को सम्मिलित किया गया है। पर्यावरण शिक्षा का प्रबन्धन सूचना तकनीक के आधार पर किया जाता रहा है। भारत में गुरूकुल की परम्परा कायम रही है। गुरूकुल की परम्परा में भी पर्यावरण शिक्षा को विशेष महत्व दिया जाता था। पर्यावरण शिक्षा, शिक्षण क्षेत्र में प्रबंधन से जुड़ा हुआ है। यह संगठित शिक्षण पद्धति पर आधारित है। इसके अन्तर्गत प्राकृतिक पर्यावरण के उपागमों तथा उनकी क्रियाशीलता के संबंध में जानकारी दी जाती है। इसका क्षेत्र विस्तृत है। इसक आंरभिक प्रबंन्ध प्राथमिक विद्यालयों में किया जाता है। माध्यमिक विद्यालय, उच्चतर माध्यमिक तथा उच्च शिक्षा के क्षेत्र भी पर्यावरण शिक्षा का विस्तार किया जा रहा है। पर्यावरण शिक्षा के अन्तर्गत निम्नलिखित बिन्दुओं पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है।

1. पर्यावरण और पर्यावरण चुनौतियों के बारे में जागरूकता और संवेदनशीलता
2. पर्यावरण और पर्यावरण चुनौतियों के बारे में समझ और जानकारी
3. पर्यावरण के सम्बन्ध में चिंता की प्रवृत्ति और पर्यावरण की गुणवत्ता बनाये रखने में सहायता

RRIJM 2015, All Rights Reserved

4. पर्यावरणीय समस्याओ को दूर करने की कुशलता
5. मौजूदा ज्ञान और पर्यावरण से संबंधित कार्यक्रमों के अभ्यास में भागीदारी

पर्यावरण शिक्षा की जड़ें 18वीं शताब्दी जैसे प्रारंभिक समय में पायी जा सकती है जब जीन–जैक्स रूसो ने ऐसी शिक्षा के महत्व पर जोर दिया था, जो Emil: or, On Education में पर्यावरण के महत्व पर केन्द्रित हो। कई दशकों बाद, लुईस अगासिज जो एक स्विस में जन्में प्रकृतिवादी थे, उन्होंने भी छात्रों को ''किताबों का नहीं, प्रकृति का अध्ययन' करने के लिए प्रेरित किया और रूसों के दर्शन का समर्थन किया। इन दोनों प्रभावशील विद्वानों ने एक सुदृढ़ पर्यावरण शिक्षा कार्यक्रम की नींव डालने में सहायता की, जो प्रकृति अध्ययन के नाम से जाना जाता है, यह 20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध व् 19वीं शताब्दी के पूर्वार्ध के दौरान की घटना है।

प्रकृति अध्ययन के आन्दोलन में छात्रों को प्रकृति की प्रशंसा व प्रतिक जगत के अंगीकरण की भावना के विकास में सहायता के लिए पौराणिक कथाओं व नैतिक शिक्षा का उपयोग किया जाता था। कॉर्नेल विश्वविद्यालय में प्रकृति अध्ययन विभाग की विभागाध्यक्ष ऐना बोट्स्फोर्ट् कौमस्टॉक, प्रकृति अध्ययन आन्दोलन में एक प्रसिद्ध हस्ती थीं और उन्होंने 1911 में हैंडबुक फॉर नचर स्टडी नामक किताब लिखी, जिसमें सांस्कृतिक मान्यताओं के सम्बन्ध में बच्चों को शिक्षित करने के लिए प्रकृति का उपयोग किया जाता है। कॉर्नस्टॉक और आन्दोलन के अन्य नेताओं, जैसे कि लिबर्टी हाइड बैले ने सामुदायिक नेताओं, अध्यापकों और वैज्ञानिकों द्वारा आश्चर्यजनक समर्थन एकत्र करने में प्रकृति अध्ययन की सहायता की और पूरे संयुक्त राज्य में बच्चों का विज्ञान का पाठ्यक्रम भी परिवर्तित कर दिया।

आधुनिक पर्यावरणीय शिक्षा आन्दोलन जिसने 1960 के दशक के अंतिम और 1970 के प्रारंभिक वर्षो में स्पष्ट वेग प्राप्त किया, वह प्रकृति अध्ययन और संरक्षण शिक्षा से ही निकला है। इस काल के दौरान, कई घटनाओं– जैसे नागरिक अधिकार, वियतनाम युद्ध और शीत युद्ध– ने अमेरिकी लोगों को एक दूसरे व यू. एस. सरकार के विरूद्ध कर दिया। हालाँकि, अधिकांशत: लोग विकिरण विच्छेद से डरने लगे, रैचल कार्सन की साइलेंट स्प्रिंग में उल्लेखित रासायनिक कीटनाशक और वायु प्रदूषण व अपशिष्ट की अधिक मात्रा, अपने स्वास्थ्य और स्वाभाविक पर्यावरण के स्वास्थ्य के प्रति लोगों की चिंता ने एक एकीकृत तथ्य का मार्ग प्रशस्त किया जिसे पर्यावरणवाद के नाम से जाना जाता है।

एक नए आन्दोलन के रूप में पर्यावरण शिक्षा के बारे में पहला लेख 1969 में फी डेल्टा कप्पन में प्रकाशित हुआ जिसके लेखक जेम्स. ए. स्वान थे। 'पर्यावरण शिक्षा' की एक परिभाषा सबसे पहले मार्च 1970 में एजुकेशन डाइजेस्ट में प्रकाशित हुई जिसे विलियम स्टाप ने लिखा था, बाद में स्टाप युनेस्को के पर्यावरण शिक्षा के प्रथम निदेशक बने, और फिर ग्लोबल इंटरनेशनल नेटवर्क के।

अंतत:, 22 अप्रैल 1970 को मनाये गए प्रथम पृथ्वी दिवस (अर्थ डे)– पर्यावरणीय समस्याओं के विषय में एल राष्ट्रीय शिक्षा– ने आधुनिक पर्यावरण शिक्षा के लिए मार्ग प्रशस्त किया। उसी वर्ष बाद में, राष्ट्रपति निक्सन ने पर्यावरणीय शिक्षा अधिनियम को स्वीकृति दे दी, जिसका उदेश्य K-12 विद्यालयों में पर्यावरणीय शिक्षा को सम्मिलित करना था। इसके बाद, 1971 में, द नेशनल एसोशियेशन फॉर एंवयार्मेंटल एजुकेशन (जिसे नॉर्थ अमेरिकन एसोशियेशन फॉर एंवयामेंटल एजुकेशन के नाम से जाना जाता है) का निर्माण हुआ जिससे पर्यावरण शिक्षा कार्यक्रम को प्रोत्साहन किया जा सके और अध्यापकों को संसाधन उपलब्ध कराने के द्वारा पर्यावरण साक्षरता में सुधार किया जा सके।

अंतर्राष्ट्रीय रूप से, पर्यावरण शिक्षा को मान्यता तब मिली जब 1972 में स्टॉकहोम, स्वीडेन में मानव पर्यावरण पर आयोजित यू ऍन कॉन्फ्रेंस ने पर्यावरणीय शिक्षा को वैश्विक पर्यावरणीय समस्याओं से निपटने के लिए एक आवश्यक उपकरण घोषित कर दिया। द युनाइटेड नेशंस एजुकेशन साइंटिफिक एंड कल्चरल ऑर्गेनाइजेशन (UNESCO) और युनाइटेड नेशंस एन्वायरमेंट प्रोग्रैम (UNEP) ने तीन प्रमुख घोषणायें की जिन्होंने पर्यावरणीय शिक्षा के प्रवाह का मार्ग निर्देशन किया।

थॉमस वेबर ने 1987 में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'Hugging the Trees : The story of the Chipko Movement' में स्पष्ट किया है कि सुन्दर लाल बहुगुणा ने चिपको आन्दोलन को एक वैचारिक आधार प्रदान किया। सुन्दर लाल बहुगुणा वनों को पुन: हरित करने के पक्ष में हैं। उनके अनुसार मनुष्य को बचाने की तरफ पहला कदम पेड़ों को बचाना है। वे मानते है कि पहाड़ों पर सभी वृक्षो की रक्षा अपेक्षित है।

F.K. Cylke (1993) ने अपनी पुस्तक 'The Environment' में स्पष्ट किया है कि संपूर्ण दुनिया में पर्यावरण तथा विकास एक महत्वपूर्ण समाजशास्त्रीय मुद्दा ने लोगों का ध्यान आकर्षित किया है। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया है कि औद्योगिकीकरण के कारण पर्यावरण प्रभावित हुआ है। प्राकृतिक पर्यावरण खतरनाक दौर में है। साथ ही भौतिक पर्यावरण भी प्रदूषण से प्रभावित है।

W.E. Stead तथा I. G. Stead (1996) ने अपनी पुस्तक 'Management for a small planet : Strategic Decision Making and the Environment' मे स्पष्ट किया है कि पर्यावरण संकट ने विकास के रफ्तार को प्रभावित किया है। प्रदूषण के कारण

RRIJM 2015, All Rights Reserved 

कार्य संस्कृति, स्वास्थ्य तथा क्रियाशीलता भी प्रभावित होता है।

एस. एल. मल्लिक तथा डी. एल भट्टाचार्य ने अपनी पुस्तक ' Aspects of Human Ecology' में स्पष्ट किया है कि पारिस्थितिकी तत्र के अन्तर्गत एक स्थान पर रहने वाले सभी प्राणियों का अपने–आप में एवं पर्यावरण से अन्त:क्रिया पर आधारित संबंध होता है। इस प्रकार मानव तथा पर्यावरण परस्पर अंत:संबंधित है।

प्रख्यात चिन्तक रॉबर्ट एस0 मैकनमरा ने स्पष्ट किया है कि हमारा दायित्व एक नकारा पर्यावरण बनाना नहीं है, जिसमें लोग निर्धन हो जाएँ, बल्कि एक ऐसे वातावरण का निर्माण करें जिसमें लोग गर्व महसूस करें।

जून 5–16 1972 को संयुक्त राष्ट्र संघ के अधिवेशन में मानव पर्यावरण के संबंध में प्रस्ताव पारित किया गया। प्रस्ताव के अन्तर्गत शिक्षा के महत्व को स्वीकार किया गया। नई पीढी को मानव पर्यावरण के संबंध में जानकारी देने के लिए पर्यावरण शिक्षा के विविध आयामों को रेखांकित किया गया।

अक्टॅबर 13–22, 1975 को द बेलग्रेड चार्टर को प्रस्तुत किया गया। इसके अन्तर्गत पर्यावरण शिक्षा की प्रकृति, उद्देश्य, नियम, सिद्धान्तों को प्रस्तुत किया गया। भारत में भी पर्यावरण शिक्षा के महत्व पर विचार किया गया। 1980 के कालखण्ड में पर्यावरण शिक्षा को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया। यह पाठ्यक्रम वैज्ञानिक प्रबन्धन, आधुनिक तकनीक सूचना क्रान्ति पर आधारित हैं। जहिर है कि पर्यावरण शिक्षा शिक्षकों तथा छात्रों के लिए एक महत्वपूर्ण परन्तु चुनौतिपूर्ण पाठ्यक्रम है।

## निष्कर्ष :

जितना अधिक पर्यावरण की शिक्षा के प्रति जागरूकता तथा संवेदनशीलता में वृद्धि होगी उतना अधिक पर्यावरण शिक्षा का विकास होगा।

यह प्रबन्धन पर आधारित विषय है। यह वैज्ञानिक दृष्टि तथा पद्धति पर आधारित है अत: पर्यावरण शिक्षा में जितना अधिक प्रबन्धन दिया जायेगा, उतना अधिक पर्यावरण शिक्षा को व्यवस्थित किया जा सकता है। पर्यावरण शिक्षा का दायरा व्यापक है। अत: जितना अधिक शिक्षकों को पर्यावरण शिक्षा के संबंध में प्रशिक्षण दिया जायेगा, उतना अधिक पर्यावरण शिक्षा के विकसित होने की संभावना दिखाई देगी। जितना अधिक संचार क्रांति, सूचना तकनीक एवं वर्ग –प्रबन्धन पर ध्यान दिया जायगा, उतना अधिक पर्यावरण शिक्षा का बहुमुखी विकास होगा।

## संदर्भ सूची


1. Malone, K. 1999, Environmental education researchers as environmental activists. Environmental Education Research 5(2) : 163-177.
2. Hoelscher, David W. " Cultivating the Ecological Conscience: Smith, Orr, and Bowers on Ecological Education." M.A. thesis, University of North Texas, 2009.


RRIJM 2015, All Rights Reserved 